कठपुतली और भाषा शिक्षण

बच्चे के सीखने के अनुभव में भाषा सबसे महत्वपूर्ण उपकरण होती है। बच्चों को उनकी मातृभाषा के अलावा अन्य भाषाओं से बहुत कम उम्र में ही परिचित करवा दिया जाता है। अधिकांश स्कूल शिक्षा का माध्यम अँग्रेजी को बनाते हैं क्योंकि माता पिता यह चाहते हैं कि उनके बच्चों का- जल्दी से जल्दी अँग्रेजी से नाता बने, क्योंकि इसे सफलता की शुरुआती सीढ़ी माना जाता है।

किसी भी भाषा को सीखने के प्रमुख घटक हैं:

- **अंग - नियंत्रण पर संचालन**
- **देखकर भेद करने की क्षमता**
- **सुनकर भेद करने की क्षमता**

ये तीन घटक भाषा के मुख्य कौशलों को विकसित करते हैं, सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा सिखाने की इस पद्धति में कठपुतलियों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया जा सकता है।

कठपुतलियाँ ही क्यों?

जो भी काम शिक्षक कर सकता है, उसे एक कठपुतली भी कर सकती है। कठपुतलियाँ नाच सकती हैं, बात कर सकती हैं, गा सकती हैं, कूद सकती हैं, पढ़ सकती हैं, लिख सकती हैं और पढ़ा भी सकती हैं। कठपुतलियों के साथ कक्षा सजीव हो जाती है।

परिणामस्वरूप बच्चे:

- दूसरों के साथ संवाद कर सकते हैं, सुनने के अच्छे कौशलों का अभ्यास कर पाते हैं, सामाजिक उपकरण की तरह भाषा का इस्तेमाल कर पाते हैं, अच्छे साहित्य को सराहते हुए उसका मजा ले पाते हैं, व्याकरण सम्मत भाषा का उपयोग कर पाते हैं, उनकी अभिव्यक्ति प्रवाहमय और स्वाभाविक होती है और चिल्लाए बिना साफ़ -साफ़ अपनी बात कह पाते हैं।
- यदि कठपुतलियों के साथ कोई लेबल और संकेतचिन्ह इस्तेमाल किए जाएँ, तो बच्चे लिखित भाषा भी सीख सकते हैं।
- बच्चे शिक्षा की इस देखने पर आधारित, सुनने पर आधारित और गति-आधारित मिली-जुली पद्धति से आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकते।

जिस ढंग से बच्चे कठपुतलियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं वह दिलचस्प होता है :वे हकीकत को ताक पर रखकर कठपुतलियों के साथ ऐसे व्यवहार करने लगते हैं जैसे कि कठपुतलियाँ प्राणवान हों। कठपुतलियाँ संवाद को बढ़ावा देती हैं क्योंकि बच्चे इन कठपुतलियों के नाम, उनकी उम्र, पसन्द और नापसन्द को जानने का प्रयत्न करते हैं।

बच्चे कठपुतलियों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति का विकास भी करते हैं, और बोलने में अपने संकोच से बाहर निकलते हैं। कठपुतलियों के बहाने वे ऐसे खुलकर भाग ले पाते हैं जैसा उन्हें खुद किसी किरदार को निभाने के लिए कहे जाने पर वे न कर पाते। कठपुतलियाँ बच्चों को भी इस काबिल बनाती हैं कि वे नई और भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभा सकें। कठपुतलियाँ कक्षा में विविधता और कभी-कभी एक जादुई अहसास ले आती हैं। आपको यह देखने को भी मिल सकता है कि वे बच्चे जिनका रवैया हमेशा सहयोगात्मक नहीं होता, या जो कक्षा में बहुत ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाते, वे भी कठपुतलियों की ओर बहुत सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया करते हैं।

कठपुतलियों का इस्तेमाल कक्षा में सामान्य जोश पैदा करने, बातचीत करने, निर्देश देने या बच्चों को भाषा से परिचित करवाने के लिए किया जा सकता है। इनका प्रयोग गानों, सामूहिक गायन, वार्तालापों, आशु रचनाओं और नाटकों में किया जा सकता है।

कठपुतलियों को सीमित जगह में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। विचित्र विशेषताओं वाले पात्रों - जैसे भूत, दैत्य, डायनासौर - जिन्हें सामान्यतः मंच पर प्रस्तुत करना मुश्किल होता है, उन्हें भी दिलचस्प कठपुतलियों में ढाला जा सकता है। इन्हें आपके द्वारा बच्चों को सुनाई जाने वाली कहानियों के साथ तथा खुद बच्चों द्वारा बनाई गई कहानियों के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

कठपुतलियों को इस्तेमाल करने के लिए अभिनय की कुछ योग्यता होना आवश्यक है, जैसे कि अलग-अलग किरदारों के लिए अलग-अलग आवाजों का इस्तेमाल करना। कठपुतली-संचालकों के लिए यह सीखना जरूरी है कि कठपुतलियों को कैसे चलाया जाता है। कठपुतलियाँ जो कह रही हैं ठीक उसी मुताबिक उनके मुँह खुलना चाहिए; कभी-कभी कठपुतलियों को स्थिर रहना होता है, या उपयुक्त ढंग से मुड़ना या चलना होता है, और साथ ही ध्यान से मंच पर प्रवेश करना व बाहर भी निकलना होता है। हालाँकि, बच्चों का कठपुतलियों पर बस इतना नियंत्रण होना चाहिए कि उनका नाटक रोचक रहे और दर्शकों के रूप में बैठे उन्हीं के साथियों को पूरा नाटक समझ में आ सके।

कठपुतलियों को सीमित जगह में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। विचित्र विशेषताओं वाले पात्रों जैसे - भूत , दैत्य , डायनासौर पर मंच सामान्यतः जिन्हें - प्रस्तुत करना मुश्किल होता है, उन्हें भी दिलचस्प कठपुतलियों में ढाला जा सकता है। इन्हें आपके द्वारा बच्चों को सुनाई जाने वाली कहानियों के साथ तथा खुद बच्चों द्वारा बनाई गई कहानियों के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

कठपुतलियों को इस्तेमाल करने के लिए अभिनय की कुछ योग्यता होना आवश्यक है, जैसे कि अलग करना। इस्तेमाल का आवाजों अलग-अलग लिए के किरदारों अलग- जाता चलाया कैसे को कठपुतलियों कि है जरूरी सीखना यह लिए के संचालकों-कठपुतली चाहिए खुलना मुँह उनके मुताबिक उसी ठीक हैं रही कह जो कठपुतलियाँ है।; कभी कभी- है होता रहना स्थिर को कठपुतलियों, या उपयुक्त ढंग से मुड़ना या चलना होता है, और साथ ही ध्यान से मंच पर प्रवेश करना व बाहर भी निकलना होता है। हालाँकि, बच्चों का कठपुतलियों पर बस इतना नियंत्रण होना चाहिए कि उनका नाटक रोचक रहे और दर्शकों के रूप में बैठे उन्हीं के साथियों को पूरा नाटक समझ में आ सके।

कक्षा में प्रभावशाली ढंग से कठपुतलियों का इस्तेमाल करना

- किसी अवधारणा या गतिविधि को प्रस्तुत करने या उसे मज़बूत बनाने के लिए कठपुतलियों का इस्तेमाल करें। बच्चों के समूह से वार्तालाप करते वक्त कठपुतली को स्थिर पकड़े रहें। बोलते समय कठपुतली को देखें। जब कठपुतली जवाब दे रही हो तो उसका मुँह इस तरह चलाएँ, या उसके शरीर की ऐसी हरकत कराएँ जैसे कि वह बच्चों से बात कर रही हो। और फिर ध्यान रखें कि जब आप या कोई दूसरी कठपुतली बोल रही हो तो उसे स्थिर पकड़े रहें।
- कुछ कठपुतलियाँ केवल शिक्षकों के लिए निर्देशित पाठों में उपयोग करने हेतु होती हैं। ये आमतौर पर विशाल, विशिष्ट कठपुतलियाँ होती हैं जो कक्षा शुभंकर- हैं सकती हो प्रगट लिए के बनाने आनन्दमय को दिन आपके ये हैं। सकती बन, या अगर कमरे में बहुत अधिक शोर मच रहा हो तो डरकर गायब भी हो सकती हैं।

कठपुतलियों का इस्तेमाल करते हुए वार्तालाप सिखाने वाली कक्षा

- कठपुतली से एक पाठ पढ़वाएँ। बच्चे कठपुतली से सवाल पूछें। कठपुतली भी उनसे सवाल पूछ सकती है। आप सवालों को बोर्ड पर लिख सकते हैं।
- कठपुतलियाँ के माध्यम से बच्चे एक-दूसरे से बातचीत कर सकते हैं।
- सारे बच्चे कमरे में इधर से उधर टहलते हुए एक-दूसरे की कठपुतलियों से बात करें।
- प्रत्येक बच्चा एक चित्र बनाकर अपनी-अपनी कठपुतलियों के बारे में लिखे।
- अपनी कठपुतलियों के किरदार तय कर लेने के बाद, वे अब नाटक तैयार कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें किसी कथा की रूपरेखा बताकर उनकी मदद करें।

कठपुतली खेल की मूल भावना मनोरंजन करना है बस इस ही धारणा के साथ बच्चों को पढ़ाना होगा| कठपुतली का उपयोग अनुभव जगत को समृद्ध करने का एक कारगर तरीका हैं इस तरीके से भाषा जीवंत हो जाती हैं| छात्रों को किताबी शिक्षा के अलावा

अपने खुद के कार्यानुभवों से भी सीखने को मिलता हैं जिस कारण उनके सर्वांगीण विकास को बढ़ाने में मदद मिलती हैं|

About the Author

शैलजा चौधरी गत छः वर्षों से टेक महिंद्रा फांउडेशन के साथ आईटीईआई ईडीएमसी के हिन्दी विभाग से जुड़ी हुई है। इनकी शैक्षणिक योग्यता शिक्षा शास्त्र के साथ साथ दो विषयों राजनीति विज्ञान और हिन्दी में परास्नातक की हैं। लेखन कार्यों में इन की विशेष रुचि है | अपनी कविता-कहानियों में ये हमेशा सामाजिक और वर्तमान विषयों को शामिल करती हैं | वर्तमान मुद्दों पर इन के विचार स्वत: ही शब्दों में गठित होते चले जाते हैं| शिक्षकों के साथ हिन्दी विषय के पठन- पाठन में नवाचार लाने के लिए निरंतर कार्यरत हैं| इन को पढ़ना और पढ़ाना पसंद है और आगे भी निरंतर शिक्षा और लेखन कार्यों में नवाचार लाने कि कोशिश जारी रखेंगी |

shailja.chaudhary@techmahindrafoundation.org